राष्ट्र निर्माण में स्वामी विवेकानन्द का सामाजिक, आर्थिक व राजनीति विज्ञान संबंधी दृष्टिकोण भूमिका एवं प्रासंगिकता

*जगबीर सिंह

वर्तमान समाज में नैतिक गुणों का जो ह्रास हुआ है उसे स्वामीजी के विचारों को अपनाकर ही समाप्त किया जा सकता है। स्वामी विवेकानन्द लोगों के नैतिक गुणों तथा व्यक्ति के गौरव के समर्थक थे । उनका मानना था कि चूंकि राष्ट्र का निर्माण व्यक्तियों की इकाईयों के मिलने से होता है, अतः यदि इन इकाइयों में श्रेष्ठ गुण विकसित होंगे तभी राष्ट्र सही अर्थ में शक्तिशाली बन सकेगा। उन्होंने व्यक्ति के आत्म गौरव पर बल देते हुए कहा – मानव स्वभाव के गौरव को कभी मत भूलो। हममें से प्रत्येक व्यक्ति यह घोषणा करे कि – में ही परमेंश्वर हूं, जिससे बड़ा न कोई हुआ है और न ही होगा। काइस्ट और बुद्ध उस असीम महासागर की तरंगे मात्र हैं जो में हूं।

इक्कसवीं शताब्दी के बदलते परिवेश में जहॉ सूचना और प्रौद्योगिकी का युग चल रहा है वहॉ भारत की वर्तमान शिक्षा पद्धति जिसमें महज उपाधियां वितरित करने के अतिरिक्त और कोई विशेष उपलब्धि नहीं की गई है वहॉ स्वामी जी के चिंतन को अपनाना निश्चित तौर पर अपनाना आवश्यक है। स्वयं स्वामी विवेकानन्द शिक्षा की वर्तमान प्रणाली को उपयुक्त नहीं मानते थे । उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना मात्र नहीं है अपितु उसका लक्ष्य जीवन, चरित्र और मानव का निर्माण करना होता है। चूंकि वर्तमान शिक्षा इन त्तवों से युक्त नहीं है अतःवह श्रेष्ठ शिक्षा नहीं है। वे शिक्षा के वर्तमान रूप को अभावात्मक बताते थे जिसमें विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति का ज्ञान नहीं होता, उन्हें जीवन के वास्तविक मूल्यों का पाठ नहीं पढाया जाता तथा उनमें श्रद्धा का भाव नहीं पनपता है।

1. 1895 में थाउनजेंड आईलेंड पार्क(अमरीका)के एक साक्षात्कार से।
2. निवेदिता के साथ विवेकान्नद का वार्तालाप ।
3. Karma Yoga v/;k; VIII.
4. ज्ञान योग (My Ideal of Universal Religion

भारत के पिछडेपन उनका मानना था कि भारत के पिछडेपन के लिए वर्तमान पद्धति शिक्षा–पद्धति भी उत्तरदायी है। अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति को वे लिपिकों का निर्माण करने वाला एक यन्त्र मानते थे। यह शिक्षा न तो उत्तम जीवन जीने की पद्धति तकनीक प्रदान करती है और न ही बुद्धि का नैसर्गिक विकास करने में सक्षम है। उन्होंने इस शिक्षा पद्धति की आलोचना करते हुए लिखा – ऐसा प्रशिक्षण जो नकारात्मक पद्धति पर आधारित हो, मृत्यु से भी बुरा है। बालक स्कूल में जाता है और पहली बात सीखता है कि उसका पिता मूर्ख है, दूसरी बात सीखता है कि उसका बाबा पागल है, तीसरी कि उसके सभी शिक्षक पाखण्डी हैं, चौथी कि सभी पवित्र ग्रंथ झूंठे है। 16 वर्ष का होते–होते तो विद्यार्थी निषेधों का एक समूह, अस्थिहीन और जीवनहींन बन जाता है। यही कारण है कि पचास वर्षो में भी यह शिक्षा एक भी मौलिक व्यक्ति उत्पन्न नहीं कर सकी । प्रत्येक व्यक्ति जिसमें मौलिकता है, इस देश में नहीं बल्कि कहीं और पढ़ाया गया है अथवा फिर उसे अन्ध ाविश्वासों से मुक्त होने के लिए अपने देश के पुरातन शिक्षालयों में जाना पड़ा है।

स्वामी विवेकानन्द शिक्षा के बारे में कहते है कि सच्ची शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास हो। वह शब्दों को रटना मात्र नहीं है। वह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास है, जिससे वह स्वयंमेंव स्वतन्त्रतापूर्वक विचार कर ठीक–ठीक निश्चय कर सके ।

स्वामी विवेकानन्द भारतीयों के लिए पाश्चात्य दृष्टिकोण से प्रभावित शिक्षा–पद्धति को उचित नहीं मानते थे । वे शिक्षा की भारतीय पद्धति गुरुकुल पद्धति को श्रेष्ठ मानते थे जिसमें विद्यार्थियों तथा शिक्षकों में निकटता के सम्बन्ध तथा सम्पर्क रह सकें तथा विद्यार्थियों में पवित्रता, ज्ञान, धैर्य, विश्वास, विनम्रता, आदर आदि श्रेष्ठ गुणों का विकास हो सके । वे पाठ्यकम में धार्मिक ग्रंथों के अध्ययन को भी आवश्यक मानते थे । वे ऐसी शिक्षा के समर्थक थे जो संकीर्ण भेदभाव तथा

*शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

साम्प्रदायिकता के दोषों से ऊपर हो । अतः उन्होंने दलितों अथवा गरीबों के प्रति शिक्षा क्षेत्र में भेदभाव का विरोध किया तथा निःशुल्क शिक्षा का समर्थन किया ।

आज भारत को जिस साम्प्रदायिक विद्वेष का सामना करना पड रहा है उसका निवारण स्वामीजी के धार्मिक सहिष्णुता सम्बन्ध ी विचारों से किया जा सकता है। धार्मिक संकीर्णता से उपर उठते हुए उन्होंने घोषणा की कि–प्रत्येक सम्प्रदाय जिस भाव में ईश्वर की आराधना करता है, में उनमें से प्रत्येक के साथ ठीक उसी भव से आराधना करूंगा । उनके अनुसार बाइबिल, वेद, कुरान तथा अन्य धर्म ग्रन्थ समूह मानों ईश्वर की पुस्तक में एक–एक पृष्ठ हैं। वे प्रत्येक धर्म का अपना–अपना महत्व मानते थे। उनके दृष्टिकोण में एक धर्म का अनुयायी होने का अर्थ दूसरे धर्म का विरोधी होना नहीं है। इसलिए उन्होंने साम्प्रदायिकता का विरोध करतेहुए 1898 में लिखा – हमारी अपनी मातृभूमि के लिए दो महान प्रणालियॉ हिन्दू धर्म और इस्लाम का संगम ही एकमात्र आशा है।

स्त्रियों की वर्तमान में उत्पन्न समस्याओं का समाधान स्वामीजी के नारी संबंधी महान और गूढ चिंतन में प्रतिबिम्बित होता है। भारतीय नारी के राष्ट्र के प्रति दिए जाने वाले योगदान के प्रति स्वामी जी पहले से ही आश्वस्त थे। उन्हें विश्वास था कि यदि भारत का चहुँमुखी विकास करना है तो नारी की स्थिति को उपर उठाना होगा। विवेकानन्द के अनुसार, पाविन्न्य और सतीत्व तो भारतीय नारी की बहुमूल्य निधि है, जो उसे अतीत काल से परम्परा से प्राप्त हुई है। इसलिए स्वभावतः वह उसे समझती है।

सर्वप्रथम, हमें उनमें इस आदर्श के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा और भक्ति उत्पन्न करनी चाहिए यदि वे इस आदर्श पर दृढ हो गयी, तो इसके फल–स्वरूप उनका चरित्र इतना बलवान और दृढ होगा कि उसके प्रभाव से वे अपने प्राणों की आहुती देकर भी अपने पाविन्न्य एवं सतीत्व की रक्षा करना अपना धर्म समझेगी – चाहे वे विवाहित हो अथवा अविवाहित रहने का ध्रुव–संकल्प धारण किये हों।

सन्दर्भ

1. प्राच्य और पाश्चत्य रामकृष्ण मठ नागपुर 1997 पृष्ठ सं10
2. भारतीय व्याख्यान रामकृष्ण मठ नागपुर 1999
3. इण्डियन थॉट – ए क्रिटीकल सर्वे
4. आर्थिक एवं सामाजिक समस्याएं–उपकार
5. इनइक्वैलिटी अमंग मेंन–रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर 1995
6. पंजाब में अक्तूबर–नवम्बर 1897 में दिए गये भाषणों का मुख्य विषय यही था।
7. बेलूर में मार्च 1998
8. इसके पहले स्वामी विवेकानन्द की प्रेरणा से सारदानन्द और अभेदानन्द पश्चिमी देशों को गये थे – प्रकाशक
9. सितम्बर 25 : हिन्दू धर्म का सार
10. दत्त, भूपेन्द्रनाथ : विवेकानन्द : पेट्रीयोट – प्रोफेट, नवभारत पब्लिशर्स, कलकत्ता, 1954
11. रोमा रोलां : लाइफ आव विवेकानन्द, अद्वैत आश्रम, अल्मोडा,1953
12 राणावत,आढा एवं अन्यः राजनति विज्ञान– परिचय एवं भारतीय राजनीतिक विचारक,पिंकसिटी पब्लिशर्स जयपुर
13 गम्भीरानन्द स्वामीः युगनायक विवेकानन्द (तीन खण्ड) रामकृष्ण मठनगपुर, 1998
14 स्वामी विवेकानन्दः विश्वधर्म वेदान्त, वेदान्त केन्द्र प्रकाशन,जोधपुर
15 शर्मा, गुप्ता : भारतीय समाज,साहित्य भवन, आगरा
16 चन्द्र, बिपिनः आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता,हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय
17 के.दामोदरनः इण्डियन थॉट–ए क्रिटीकल सर्वे